318hi27

27

आय निर्धारण का सिद्धांत

अर्थव्यवस्था को वस्तुओं और सेवाओं का उत्पादन करना चाहिए और अपने नागरिकों के लिए आय का सृजन करना चाहिए। इसके लिए उसे रोजगार के अवसर उपलब्ध कराने चाहिए। इस संदर्भ में यह प्रश्न पूछना महत्वपूर्ण हो जाता है। ''एक अर्थव्यवस्था में कितना उत्पादन किया जाना चाहिए?'' आय व रोजगार का क्या स्तर होना चाहिए? जे.एम. केन्स, एक प्रसिद्ध अर्थशास्त्री, जिन्होंने 1930 के दशक में समाष्टि अर्थशास्त्र के अध्ययन की अगवाही की, ने इन प्रश्नों के उत्तर देने के लिए, आय और रोजगार के एक सामान्य सिद्धांत का प्रतिपादन किया।

उद्देश्य

इस पाठ का अध्ययन करने के बाद आप:

- किसी अर्थव्यवस्था की समग्र मांग, समग्र पूर्ति तथा प्रभावी मांग के अर्थ को जान पाएंगे;
- समग्र मांग के घटकों को समझा सकेंगे;
- आय तथा रोजगार का संतुलन स्तर निर्धारण कर पाएंगे;
- निवेश गुणक की अवधारणा तथा कार्यशीलता को समझ पाएंगे;
- आधिक्य मांग तथा न्यून मांग में अंतर कर पाएंगे; तथा
- आधिक्य मांग तथा न्यून मांग को दूर करने की विधियों की व्याख्या कर पाएंगे।

27.1 एक साधारण अर्थव्यवस्था का नमूना

जब हम किसी अर्थव्यवस्था की आय तथा रोजगार के विषय में बातचीत करते हैं तो पहला कदम अर्थव्यवस्था के समग्र मांग फलन को परिभाषित करना होता है। यहां हम मान लेते हैं कि अर्थव्यवस्था अल्प काल में काम कर रही है।

27.1.1 समग्र मांग की अवधारणा

किसी अर्थव्यवस्था की समग्र मांग को, दिए गए कीमत स्तर पर वस्तुओं और सेवाओं की कुल मांग के रूप में परिभाषित किया जाता है।

कीमतें दी हुई और स्थिर है, क्योंकि अल्पकाल में वस्तुओं और सेवाओं की कीमतें परिवर्तित नहीं होती।

समग्र मांग का एक माप, अर्थव्यवस्था के विभिन्न क्षेत्रों द्वारा प्रचलित कीमत स्तर, वस्तुओं और सेवाओं के उपभोग पर कुल व्यय है। अब प्रश्न उठता है–

अर्थव्यवस्था में उपभोग करने वाले क्षेत्र कौन–से हैं? यह ध्यान रखिए कि अर्थव्यवस्था का समस्त उत्पाद अंतिम उपभोग के साथ भावी उत्पादन के लिए प्रयोग किया जाता है। उसी के अनुसार, हम निम्न उपभोग क्षेत्रों की पहचान कर सकते हैं।

1. परिवार
2. फर्म
3. सरकार
4. शेष विश्व

समग्र मांग इन सभी क्षेत्रों की वस्तुओं और सेवाओं की मांग को मिलाकर बनती है। आओ, समग्र के इन घटकों की अलग से व्याख्या करते हैं।

1. पारिवारिक उपभोग मांग

पारिवारिक क्षेत्र में व्यक्ति, परिवार तथा परिवारों की सेवा में संलग्न गैर–लाभकारी संगठन होते हैं। ये सभी आवश्यकताओं की संतुष्टि के लिए अंतिम वस्तुओं और सेवाओं का उपभोग करते हैं। व्यक्ति और परिवार टिकाऊ तथा गैर–टिकाऊ दोनों प्रकार की वस्तुओं की मांग करते हैं। टिकाऊ वस्तुओं के उदाहरण हैं–टेलीविजन, रेफ्रिजरेटर, कपड़े धोने की मशीन, कार, स्कूटर, मोटर साइकिल, फर्नीचर आदि। गैर–टिकाऊ वस्तुओं में खाद्य तथा गैर–खाद्य वस्तुएं सम्मिलित होती हैं। अनाज, दालें, सब्जियां, फल आदि खाद्य पदार्थ हैं, जबकि कपड़े, जूते, श्रृंगार का सामान, ईंधन आदि गैर–खाद्य मदों के भाग है। परिवारों द्वारा इन सभी वस्तुओं की मांग की जाती है।

परिवार क्षेत्र की सेवा में संलग्न गैर–लाभकारी संगठनों में धर्मार्थ ट्रस्ट, धार्मिक संस्थान आदि सम्मिलित होते हैं, जो परिवारों की सेवा के लिए वस्तुओं और सेवाओं की मांग करते हैं। वे लाभ कमाने के लिए व्यवसाय नहीं करते। उदाहरण के लिए, विभिन्न प्रकार से योग्य व्यक्तियों की सेवा के लिए एक ट्रस्ट बहुत–सी वस्तुओं, जैसे–ऑफिस, स्टेशनरी, फर्नीचर, वाहन आदि की मांग करता है। इस प्रकार का उपभोग पारिवारिक उपभोग व्यय का भाग है।

2. उत्पादकों अथवा फर्म की निवेशमांग

फर्म तथा/अथवा उत्पादक, आगे उत्पादन के लिए वस्तुओं और सेवाओं की मांग करते हैं। फर्म द्वारा किसी वस्तु का उत्पादन करने के लिए वस्तुओं की मांग 'निवेश' कहलाती है। फर्म पूंजीगत वस्तुओं, जैसे–मशीन और उपस्करों की मांग करती हैं। वे आगे उत्पादन के लिए मध्यवर्ती वस्तुओं की भी मांग करती है। किसी वस्तु के उत्पादन के लिए पानी, बिजली, कच्चा माल आदि का प्रयोग मध्यवर्ती उपभोग कहलाता है।

3. सरकारी व्यय

सरकार एक महत्वपूर्ण क्षेत्र है, जो जनता की भलाई के लिए वस्तुएं तथा सेवाएं खरीदती है। इसलिए सरकार द्वारा सभी क्रय मध्यवर्ती वस्तुएं कहलाती हैं। सरकार, सेवाएं जैसे–कानून व्यवस्था, सुरक्षा, शिक्षा, स्वास्थ्य आदि उपलब्ध कराती है। इन सेवाओं को उपलब्ध कराने के लिए, सरकार विभिन्न मंत्रालयों तथा विभागों के माध्यम से कार्य करती है। इन दफ्तरों के रख-रखाव के लिए सरकार, वर्दी, वाहन, स्टेशनरी का सामान, फर्नीचर आदि खरीदती है। यह अपने कर्मचारियों का वेतन देने पर मुद्रा व्यय करती है। इस प्रकार, सरकारी व्यय समग्र मांग का एक बहुत बड़ा भाग है।

4. शेष विश्व द्वारा क्रय

हम वैश्वीकरण के युग में रह रहे हैं, जिसमें देश एक-दूसरे के साथ व्यापार तथा विनिमय से जुड़े हैं। कोई देश, जो किसी दूसरे देश के साथ आर्थिक संबंध रखता है, उसे खुली अर्थव्यवस्था कहते हैं। एक खुली अर्थव्यवस्था में, अन्य देश जो घरेलू देश के साथ आर्थिक संबंध रखते हैं, शेष विश्व कहलाते हैं। घरेलू देश के परिवार, जिस प्रकार देश के अंदर वस्तुएं तथा सेवाएं की मांग करते हैं, ठीक उसी तरह, विदेशी भी देश के बाहर से वस्तुएं व सेवाएं खरीदते हैं। इसे शेष विश्व का आयात अथवा घरेलू देश का निर्यात कहते हैं। लेकिन, क्योंकि घरेलू देश के परिवार, फर्म तथा सरकार भी विदेशों से वस्तुएं तथा सेवाएं खरीदते हैं, जिन्हें शेष विश्व से आयात कहते हैं। शुद्ध निर्यात की गणना करने के लिए देश के शेष विश्व को किए गए निर्यातों में से घरेलू देश के विदेशों से किए गए आयातों को घटाते हैं। निर्यात-आयात शुद्ध निर्यात कहलाते हैं। शुद्ध निर्यात शेष विश्व द्वारा घरेलू देश में वस्तुओं और सेवाओं की मांग का माप है।

अब हम कह सकते हैं कि समग्र मांग, परिवारों, फर्मों, सरकार तथा शेष विश्व द्वारा की गई मांग का योग है। हम परिवारों की मांग को उपभोग, फर्मों की मांग को निवेश, सरकारी मांग को सरकार का क्रय तथा शेष विश्व की मांग को शुद्ध निर्यात कह सकते हैं। हम कह सकते हैं कि समग्र मांग, उपभोग, निवेश व सरकारी क्रय तथा शुद्ध निर्यात का योग है।

हम इसे क्रमानुसार भी लिख सकते हैं–

समग्र मांग = उपभोग + निवेश + सरकारी क्रय + शुद्ध निर्यात

$$AD = C + I + G + NX$$

जहां A.D. = समग्र मांग

C = उपभोग

I = निवेश

G = सरकारी क्रय

NX = शुद्ध निर्यात X – M जहां X = निर्यात M = आयात

समग्र मांग को अर्थव्यवस्था में समग्र व्यय या कुल व्यय भी कहते हैं।

आय के संतुलन स्तर का निर्धारण

किसी अर्थव्यवस्था में, आय का संतुलन स्तर निर्धारण करने में, पहला कदम, इसकी समग्र मांग का अनुमान लगाना है। एक खुली अर्थव्यवस्था में समग्र मांग ऊपर एक समीकरण के रूप में दी गई है।

एक साधारण मॉडल का विकास करने के लिए हम यह मान लेते हैं कि अर्थव्यवस्था में दो क्षेत्रक परिवार तथा फर्म हैं। अन्य दो क्षेत्रकों की मांग, जैसे–सरकार और शेष विश्व को, कुछ समय के लिए, दी गई, मानी जा सकती है। ऐसे विषय में, समग्र मांग उपभोग तथा निवेश का योग होगी। एक-दो क्षेत्रीय अर्थव्यवस्था में सूत्र के रूप में–

समग्र मांग = उपभोग + निवेश, AD = C + I जहां A.D. समग्र मांग

27.2 संतुलन की शर्त

किसी अर्थव्यवस्था की आय का संतुलन उस बिंदु पर निर्धारित होता है, जहां समग्र मांग कुल उत्पादन के मूल्य के बराबर होती हे।

यह कहा जा सकता है कि उत्पादन का वास्तविक मूल्य वही है, जो अर्थव्यवस्था की आय होती है। इसे Y से दिखाया जा सकता है। यह भी कहा जाता है कि आय को उपभोग तथा निवेश में विभाजित किया जाता है।

इसलिए, Y = C + S, आय = उपभोग + बचत

जहां S = बचत

इसलिए संतुलन की शर्त के अनुसार यह लिखा जा सकता है कि

AD = Y, समग्र मांग = आय ...(ii)

अथवा C + 1= C + S (उपभोग + निवेश = उपभोग + बचत ...(iii)

अथवा I = S, निवेश = बचत ...(iv)

एक अर्थव्यवस्था में, आय का संतुलन स्तर उस बिंदु पर निर्धारित होता है, जहां समग्र मांग कुल उत्पादन के बराबर हो और निवेश बचत के बराबर हो।

पाठगत प्रश्न 27.1

1. समग्र व्यय, समग्र मांग का एक माप है। (सही या गलत)
2. एक अर्थव्यवस्था में निर्यात और आयात का अंतर क्या कहलाता है?
3. किसकी मांग, वस्तुओं और सेवाओं की अंतिम मांग कहलाती है?
   (a) फर्मों (b) सरकार
   (c) परिवारों (d) शेष विश्व
4. संतुलन आय की शर्त इस प्रकार दी गई है–
   (a) $C = S$, उपभोग = बचत
   (b) $C + I = C + S$, उपभोग + निवेश = उपभोग + बचत
   (c) $C + S = S + 1$, उपभोग + बचत = बचत + निवेश
   (d) $S = Y$, बचत = आय

27.2.1 रेखाचित्र द्वारा निरूपण

आय का संतुलन स्तर रेखाचित्र का प्रयोग करके प्रस्तुत किया जा सकता है। पहले हमें समग्र मांग का रेखाचित्र बनाना पड़ता है, जो दो क्षेत्रीय अर्थव्यवस्था में उपभोग तथा निवेश का योग होती है। आप पिछले अध्याय में पहले ही उपभोग तथा निवेश फलन के रेखाचित्र देख चुके हो। C + I का रेखाचित्र बनाने के लिए हम इन दोनों रेखाचित्रों का प्रयोग करेंगे जैसा नीचे दिया गया है–

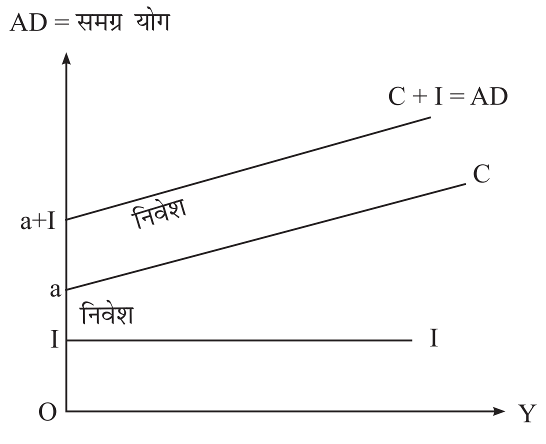

चित्र 27.1

पहले अध्याय में हमने कहा कि उपभोग फलन Y अक्ष पर किसी बिंदु 'a' से प्रारंभ होता है, जहां oa स्थिर उपभोग का माप है। तब बिंदु 'a' से उपभोग फलन MPC की दर से ऊपर की ओर जाता है, पहले पाठ में यह भी बताया गया है कि निवेश स्थिर या स्वायत्त है। इसलिए जब हम उपभोग फलन के साथ निवेश जोड़ते हैं, तभी स्थिर उपभोग तथा स्थिर निवेश अपने आप जुड़ जाते हैं, जिससे C + I उस बिंदु से शुरू होगा a +I जहां 0 से a + I परिवार तथा फर्म दोनों को मिलाकर स्वायत्त व्यय होगा।

C + I की समीकरण

ध्यान दीजिए जैसा पहले कहा गया है: $C = a + by$

तथा I (निवेश) स्थिर राशि है

इसलिए $C + I = a + bY + I$

$= (a + I) + bY$

जहां $b = MPC$ (सीमांत उपभोग प्रवृत्ति)

यह स्पष्ट रूप से देखा जाता है कि उपभोग फलन C, a से प्रारंभ होता है, समग्र मांग (C + 1), a + I से प्रारंभ होता है, जो C से ऊपर I (निवेश) की राशि के बराबर होता है। दोनों C और C + I ऊपर की ओर MPC की दर से जाते हैं, इसलिए C तथा C + I एक-दूसरे के समांतर होते हैं।

27.2.2 45° रेखा का महत्व

उत्पादन का मूल्य वही होता है, जो आय के संतुलन का स्तर है। Y आय उपभोग तथा बचत का योग है। अथवा Y = C + S रेखागणित के रूप में मूल बिंदु 45 अंश की रेखा पर C + S = Y जबकि हम Y को X अक्ष पर तथा C + S को Y अक्ष पर मापते हैं। यह ध्यान देना चाहिए कि 45 अंश रेखा पर C + S = Y क्योंकि यह समक्षेत्र को दो बराबर भागों में बांटता है। नीचे रेखाचित्र को देखें।

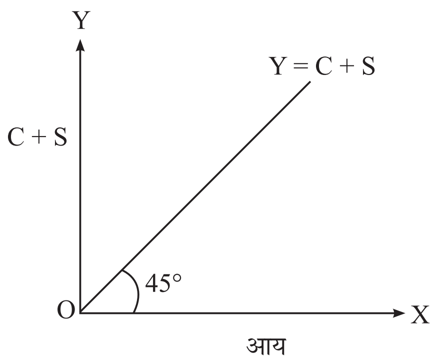

चित्र 27.2

27.2.3 संतुलन आय का रेखाचित्र

आय का संतुलन स्तर निर्धारण करने के लिए, हम उपर्युक्त दोनों रेखाचित्रों C + I तथा 45 अंश रेखा को एक साथ नीचे दिए गए रेखाचित्र में ला सकते हैं।

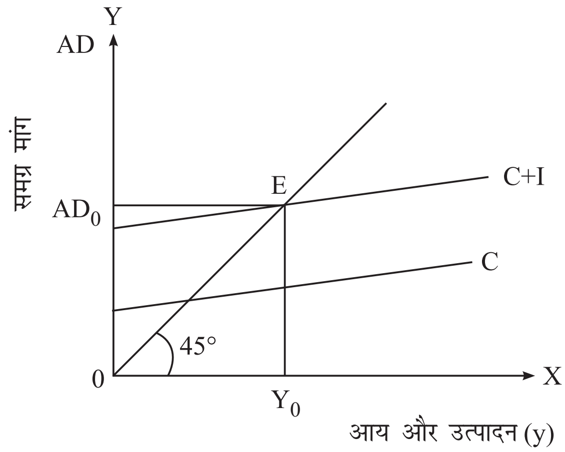

चित्र 27.3 : आय और उत्पादन

जैसा कि उपर्युक्त रेखाचित्र में दिखाया है, समग्र मांग रेखा, जिसे C + I से दिखाया गया है। 45 अंश रेखा को E बिंदु पर काटती है। इसलिए E संतुलन बिंदु है, जहां C + I = C + S। बिंदु E से दोनों अक्षों पर लंब डालो। लंब X अक्ष को बिंदु Yo पर काटता है, जो संतुलन आय को दर्शाता है। इसलिए आय का संतुलन स्तर Yo पर निर्धारित होता है। OYo आय के संतुलन स्तर का माप है।

समग्र मांग का स्तर, जो संतुलन आय से मेल खाता है, बिंदु AD_0 पर Y अक्ष पर निर्धारित होती है। O से AD_0 की दूरी (समग्र मांग) OYo (आय के संतुलन स्तर) की दूरी के बराबर है।

बचत तथा निवेश विधि द्वारा आय का संतुलन

आय के संतुलन स्तर को बचत तथा निवेश का प्रयोग करके भी निर्धारित किया जा सकता है। याद करो कि हमने संतुलन की शर्त दी है C + I = C + S (उपभोग + निवेश = उपभोग + बचत)। इससे यह संकेत मिलता है कि I = S इसलिए जब भी समग्र मांग कुल उत्पादन के बराबर होती है, बचत भी निवेश के बराबर होती है। इसका तात्पर्य यह है कि वह बिंदु जिस पर बचत और निवेश बराबर होते हैं, वह आय का संतुलन स्तर होता है। नीचे के रेखाचित्र को देखिए–

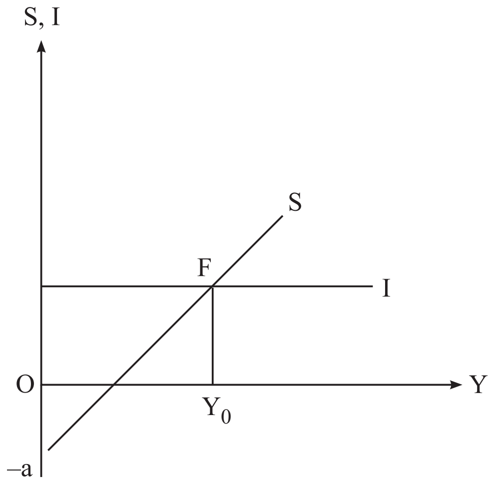

चित्र 27.4

चित्र 27.4 में आय (Y) को X अक्ष पर तथा बचत तथा निवेश को Y- अक्ष पर मापा गया है। निवेश वक्र I को एक क्षैतिजाकार रेखा के रूप में दिखाया गया है, जो यह दिखाती है कि निवेश आय के सभी स्तरों पर स्वायत्त अथवा स्थिर है। बचत फलनमूल बिंदु से –a से प्रारंभ होकर ऊपर की ओर ढाल वाला है। उपभोग, बचत तथा निवेश का पाठ देखिए। बचत और निवेश दोनों वक्र एक-दूसरे को F बिंदु पर काटते हैं, जहां बचत = निवेश। बचत बिंदू F से आय अक्ष पर आय का संतुलन स्तर Yo प्राप्त करने के लिए एक लंब डालो। ध्यान दो कि दोनों, आय का संतुलन स्तर Yo रेखाचित्र 27.3 और रेखाचित्र 27.4 दोनों में एक समान हैं।

यह ध्यान देना चाहिए कि अर्थव्यवस्था में लोग, जो बचत करते हैं, उनसे भिन्न हो सकते हैं, जो निवेश करते हैं। इसलिए बचत और निवेश का संतुलन अपने आप चलने वाला अथवा प्राकृतिक नहीं है। ऐसा होता है कि लोग कुछ विशेष राशि बचाने की योजना बनाते हैं और अंत में भिन्न राशि बचा पाते हैं। अन्य शब्दों में, आयोजित बचत वास्तविक बचत से भिन्न हो सकती है। आयोजित तक वास्तविक राशि में अंतर, बाजार में कीमतों में अप्रत्याशित अंतर के कारण तथा परिवारों की प्रत्याशा आदि में अंतर के कारण हो सकता है। इसी प्रकार, फर्म, परिसंपत्तियों में कुछ राशि निवेश करने की योजना बनाती है, किंतु अंत में जो परिसंपत्तियां प्राप्त कर पाती हैं, वे पहले बनाई गई योजना से मूल्य में भिन्न होती हैं। यह अंतर परिसंपत्तियों (मशीनों तथा उपस्कर) के मूल्य वृद्धि या कमी के कारण हो सकता है या बैंकों से ऋण की उपलब्धता आदि के कारण हो सकता है। इसलिए नियोजित तथा वास्तविक निवेश बराबर हो भी सकते हैं और नहीं भी। केन्स ने नियोजित निवेश को संभावी (एक्स एन्टे) तथा वास्तविक निवेश को (एक्स पोस्ट) कहा है।

तद्नुसार, हमारी बचत और निवेश संभावी तथा वास्तविक होते हैं। संतुलन आय के स्तर Yo से नीचे आधिक्य मांग होती है, क्योंकि I > S इसी प्रकार Yo से ऊपर आधिक्य पूर्ति की स्थिति होती है, क्योंकि S>1 अर्थव्यवस्था में आधिक्य मांग अथवा आधिक्य पूर्ति के कारण, कीमत स्तर तथा लोगों की आशाओं में परिवर्तन आता है। इसलिए संभावी तथा वास्तविक मद बराबर नहीं होते। आय के संतुलन स्तर Yo पर न तो आधिक्य मांग होती है और न ही आधिक्य पूर्ति।

इसलिए आय के संतुलन स्तर पर संभावी बचत और निवेश वास्तविक बचत और निवेश के बराबर होते हैं।

27.2.4 प्रभावी मांग की अवधारणा

केन्स के अनुसार, संतुलन आय का सिद्धांत जिनकी देन है, चित्र 27.3 में बिंदु E प्रभावी मांग का बिंदु है। दूसरे शब्दों में, अर्थव्यवस्था में प्रभावी मांग वह बिंदु है, जिस पर अल्पकाल में दी गई कीमत पर समग्र मांग उत्पादन के स्तर के बराबर होती है। इससे यह संकेत मिलता है आय का संतुलन स्तर, अर्थव्यवस्था में प्रभावी मांग को प्रतिबिंबित करता है।

पाठगत प्रश्न 27.2

1. समग्र मांग तथा उपभोग में अंतर कहलाता है ....।
2. जिस दर पर समग्र मांग बढ़ती है .... कहलाती है।
3. समग्र मांग (AD) तथा प्रभावी मांग (ED) में भेद कीजिए।

27.3 गुणक और इसकी कार्यशीलता

प्रत्येक अर्थव्यवस्था प्रति वर्ष अपनी आय के संतुलन स्तर में वृद्धि लाना चाहती है। आप जानते हैं कि आय में वृद्धि आर्थिक संवृद्धि की अभिव्यक्ति है, जो जनसंख्या के रहन-सहन के स्तर में वृद्धि लाने के लिए अनिवार्य है। इसे प्राप्त करने के लिए, अर्थव्यवस्था को निवेश के स्तर में वृद्धि लानी चाहिए। निवेश में वृद्धि से आय में कई गुणा वृद्धि लाने की आशा की जाती है। इसका तात्पर्य यह है कि आय में वृद्धि, निवेश में वृद्धि से अधिक होनी चाहिए। ऐसी दशा में, आय में वृद्धि को निवेश में वृद्धि की, किसी संख्या जो एक से अधिक है, से गुणा करके व्यक्त किया जा सकता है। मान लो, अर्थव्यवस्था में निवेश 100 करोड़ से बढ़कर 150 करोड़ रुपये हो जाता है तो निवेश में वृद्धि 150 – 100 = 50 करोड़ होती है। हमें आशा करनी चाहिए कि आय के स्तर में 100 करोड़ रुपये की वृद्धि हो जाती है, क्योंकि 100 = 2 × 50 यह कहा जा सकता है कि आय में वृद्धि, निवेश में वृद्धि से दो गुना है। निवेश में वृद्धि दी हुई होने पर वह संख्या, जिससे इसे गुणा किया जाता है, निवेश गुणक कहलाती है। इस उदाहरण में निवेश गुणक 2 है।

27.3.1 निवेश गुणक की परिभाषा

उपर्युक्त उदाहरण में हम कह सकते हैं कि निवेश गुणक 2 है, जिसे प्राप्त करने के लिए 100 करोड़ को 50 करोड़ से भाग किया जाता है। इसका अर्थ यह है कि

$$2 = \frac{100 \text{ करोड़}}{50 \text{ करोड़}}$$

हम इसे सूत्र के रूप में रख सकते हैं। यहां 100 करोड़ आय में वृद्धि है, इसे ΔY से दिखाइए। 50 करोड़, जो निवेश में वृद्धि है, उसे ΔI से दिखाइए। निवेश गुणक 2 को K से दिखाइए। हम लिख सकते हैं कि निवेश गुणक $k = \Delta Y / \Delta I$

इसलिए निवेश गुणक को, निवेश में वृद्धि होने पर, आय में अनुपातिक वृद्धि के रूप परिभाषित किया जाता है। इस सूत्र का प्रयोग करके हम लिख सकते हैं कि:

$$\Delta Y = k\Delta I$$

इससे यह संकेत मिलता है कि आय में वृद्धि निवेश गुणक बार निवेश में वृद्धि है। यहां निवेश में वृद्धि का मूल्य दिया होने पर का मूल्य, आय में वृद्धि की चाभी है।

यदि $K = 1$ तो $\Delta Y = \Delta I$

इसका तात्पर्य यह है कि निवेश में वृद्धि आय में कुछ राशि की वृद्धि लाती है। यदि $K > 1$ (k एक से ज्यादा है) तो निवेश में वृद्धि आय में अपने से अधिक वृद्धि लाती है। हम हमेशा आशा करते हैं कि निवेश गुणक एक से अधिक होना चाहिए। इसलिए आय में वृद्धि निवेश में वृद्धि से अधिक होगी, जिसे लाभप्रद कहा जा सकता है।

27.3.2 निवेश गुणक के मूल्य की व्युत्पत्ति

उपर्युक्त उदाहरण में यदि निवेश गुणक का मूल्य 3 हो तो आय में वृद्धि $3 \times 50 = 150$ करोड़ रुपये होगी। यदि निवेश गुणक 4 हो जाता है तो आय में वृद्धि और अधिक $4 \times 50 = 200$ करोड़ रुपये होगी। निवेश गुणक का ऊंचा मूल्य हमेशा सुखद होता है। निवेश गुणक का मूल्य कैसे निर्धारित होता है? आप जानते है कि फर्म निवेश करती है और वस्तुओं और सेवाओं का उत्पादन करने के लिए रोजगार प्रदान करती हैं और उन्हें बाजार मे बेचती हैं। उन्हें आशा होती है कि उपभोक्ताओं को उनके उत्पाद की मांग करनी चाहिए, जिससे उन्हें अधिक आगम प्राप्त हो, जिससे आय का स्तर ऊंचा होगा। यह इस बात का संकेत देता है कि उपभोग की मांग आय के स्तर को प्रभावित करने का एक महत्वपूर्ण कारक है। जैसे कि उपभोग, बचत तथा निवेश के पाठ में पहले ही कहा जा चुका है कि उपभोग की मांग स्वयं उपभोक्ता परिवारों की आय में से उपभोग की प्रवृत्ति से प्रभावित होती है। इसलिए उपभोग की प्रवृत्ति जितनी अधिक होगी, फर्मो द्वारा उत्पादन के लिए किए गए निवेश से उत्पादित वस्तुओं और सेवाओं की उपभोग मांग उतनी ही अधिक होगी। अधिक उपभोग से इन फर्मो का आगम तथवा आय ऊपर की ओर जाएगी। इसलिए निवेश गुणक जिसे निवेश में वृद्धि से गुणा किया जाता है, उपभोग की प्रवृत्ति पर निर्भर करता है। उपभोग की ऊंची प्रवृत्ति निवेश गुणक को ऊंचा करेगी और विलोमत:। पहले यह भी कहा गया है कि MPC को 1 - MPC के रूप में लिखा जाता है। यदि MPS का मूल्य कम है तो MPC का मूल्य अधिक होगा। इसलिए निवेश गुणक अधिक होता है, यदि MPC अधिक होता है अथवा MPS कम होता है। इसी प्रकार, यदि MPC कम होता है या MPS अधिक होता है तो निवेश गुणक कम होगा। MPC या MPS के द्वारा निवेश गुणक का मूल्य ज्ञात करने के लिए हम संतुलन आय प्राप्त करने के लिए निम्न शर्त का प्रयोग कर सकते हैं।

$C + I = C + S$ क्योंकि $C + S = Y$ इसलिए $C + I = Y$

सब जगह Δ से गुणा करो निम्न प्राप्त करने के लिए

$$\Delta C + \Delta I = \Delta Y$$

सबको ΔY से भाग करने पर

$$\frac{\Delta C}{\Delta Y} + \frac{\Delta I}{\Delta Y} = \frac{\Delta Y}{\Delta Y}$$ प्राप्त होते हैं

हम जानते हैं कि $\frac{\Delta C}{\Delta Y} = MPC$ तब $MPC + \frac{\Delta I}{\Delta Y} = 1$

अथवा $\frac{\Delta I}{\Delta Y} = 1 - MPC$

दोनों को उलटा करने पर हमें प्राप्त होता है

$$\frac{\Delta Y}{\Delta I} = \frac{1}{1 - MPC} = \frac{1}{MPS}$$

क्योंकि $\frac{\Delta Y}{\Delta I} = k$ अथवा निवेश गुणक। हम लिख सकते हैं कि

निवेशस गुणक $K = \frac{1}{1 - MPC}$ अथवा $\frac{1}{MPS}$

निवेश गुणक के मूल्य का प्रयोग करके हम लिख सकते हैं कि

$$\Delta Y = \frac{1}{1 - MPC} \times \Delta I \text{ or } \frac{1}{MPS} \times \Delta I$$

उदाहरण 1 : यदि MPS, 0.2 है और निवेश में 200 करोड़ रुपये की वृद्धि होती है तो आय में कितनी वृद्धि होगी?

उत्तर : $\Delta Y = \frac{I}{MPS} \times \Delta I$

$= \frac{1}{0.2} \times 200$

$= 5 \times 200$

$=$ ₹ 1000 करोड़

इसलिए आय में वृद्धि 1000 करोड़ रुपये होगी।

उदाहरण 2 : MPC, 0.75 दी गई है और निवेश 100 करोड़ रुपये से बढ़कर 150 करोड़ रुपये हो जाता है। निवेश गुणक का मूल्य तथा आय में वृद्धि ज्ञात कीजिए।

उत्तर : निवेश गुणक $\dfrac{1}{1-\text{MPC}}$

$$= \frac{1}{1-0.75}$$

$$= \frac{1}{0.25} = 4$$

आय में वृद्धि $\Delta Y = \dfrac{1}{1-\text{MPC}} \times \Delta I$

$$= 4 \times (150 - 100)$$

$$= 4 \times 50$$

= ₹ 200 करोड़

उदाहरण 3 : निवेश में वृद्धि 200 करोड़ रुपये से 280 करोड़ रुपये होने पर आय 1000 करोड़ रुपये से बढ़कर 1240 करोड़ रुपये हो गई। निवेश गुणक का मूल्य क्या है?

उत्तरः निवेश गुणक $= \dfrac{\Delta Y}{\Delta I}$

$$= \frac{1200-1000}{280-200}$$

$$= \frac{240}{80} = 3$$

इसलिए निवेश गुणक का मूल्य = 3

27.3.4 निवेश गुणक की कार्यशीलता

यह पाया गया है कि MPC का मूल्य तथा निवेश में वृद्धि दी होने पर आय में वृद्धि का निर्धारण हो सकता है। उदाहरण के लिए–

यदि $\text{MPC} = 0.5, \Delta I =$ ₹100 करोड़ हो तो

$$\Delta Y = \frac{1}{1-0.5} \times 100 = 2 \times 100 = 200 \text{ करोड़ रु.}$$

यहां हम एक प्रश्न पूछ सकते हैं। क्या आय में वृद्धि तुरंत प्राप्त हो जाती है या यह विभिन्न चक्रों के द्वारा प्राप्त होती है। वास्तव में, हम दिखा सकते हैं कि आय में 200 करोड़ रुपये की वृद्धि बहुत से चक्रों के पश्चात् होती है। यह निम्न प्रकार से होती है–

यहां $\Delta Y = \frac{1}{1-0.5} \times 100$ करोड़ रु.

निवेश गुणक $\frac{1}{1-0.5}$ का साधारण अनुपात 0.5 है, जो एक से कम है। गुणोत्तर अनुक्रम में रखने के पश्चात् हम कह सकते हैं कि

$$\frac{1}{1-0.5} = 1 + 0.5 + (0.5)^2 + 0.5^3 \text{ ....}$$

इसलिए $\frac{1}{1-0.5} \times 100$ करोड़ इस प्रकार लिखा जा सकता है

$= (1 + 0.5 + (0.5)^2 + (0.5)^3 + \text{..............}) \times 100$ करोड़

$= 100 + 0.5 \times 100 + (0.5)^2 \times 100 \; 0.5^3 + \text{...........}$

$= 100 + 50 + 25 + \text{..........}$

$= 200$

$= \frac{1}{1-0.5} \times 100 = 200$ करोड़ रु.

अथवा $2 \times 100 = 200$

उपर्युक्त अनुक्रम को हम एक सारणी के रूप में भी प्रस्तुत कर सकते हैं।

सारणी : निवेश गुणक की कार्यशीलता

उपर्युक्त उदाहरण लेकर

चक्र	ΔI	ΔY
1.	₹ 100 करोड़	₹ 100 करोड़
2.	...	₹ 50 करोड़
3.	...	₹ 25 करोड़

व्याख्या : जब निवेश 100 करोड़ रुपये बढ़ता है तो समग्र मांग (AD) 100 करोड़ रुपये बढ़ जाती है, क्योंकि निवेश AD का एक भाग है। किंतु संतुलन के बिंदु पर AD = y इसलिए

आय भी पहले चक्र में 100 करोड़ बढ़ जाती है। इससे यह भी संकेत मिलता है कि $\Delta AD = \Delta Y$

ΔY पहले चक्र में 100 करोड़ रुपये है।

दूसरे चक्र में, आय में वृद्धि के कारण उपभोग बढ़ता है, क्योंकि $MPC = 0.5$ और $\Delta Y =$ 100 करोड़ रुपये

उपभोग में वृद्धि $\Delta C = MPC \times \Delta Y = 0.5 \times 100 =$ ₹ 50 करोड़

उपभोग में 50 करोड़ की वृद्धि होने पर AD भी 50 करोड़ बढ़ जाती है, क्योंकि उपभोग AD का भाग है। किंतु $AD = y$ संतुलन पर होती है (इसलिए $\Delta AD = \Delta Y$ जैसा ऊपर कहा गया है) इसलिए दूसरे चक्र में आय में वृद्धि = 50 करोड़ रुपये है। इसलिए दो चक्रों के पश्चात् आय में वृद्धि अथवा $\Delta Y = 100 + 50 =$ 150 करोड़ रुपये

तीसरे चक्र में उपभोग में वृद्धि $\Delta C = MPC \times \Delta Y$ दूसरे चक्र की

इसलिए $\Delta C = 0.5 \times 50$ किंतु $50 = 0.5 \times 100$ इसलिए $\Delta C = 0.5 \times (0.5 \times 100) = (0.5)^2 \times 100 =$ ₹ 25 करोड़

उपभोग में वृद्धि दोबारा AD में वृद्धि लाती है और अंत में तीसरे चक्र में आय में 25 करोड़ रुपये वृद्धि होती है। इसलिए तीन चक्रों के पश्चात् आय में कुल वृद्धि = 100 + 50 + 25 = ₹ 175 करोड़

इस प्रकार आय में वृद्धि निवेश में आरंभिक वृद्धि के माध्यम से तथा बाद में उपभोग में वृद्धि के माध्यम से कई चक्रों में होती रहती है, जब तक कि यह–

$$\frac{1}{1-MPC} \times \Delta I$$ अथवा $k \times \Delta I$ के बराबर हो जाए।

पाठगत प्रश्न 27.3

1. यदि $MPS = 0.5$ तो गुणक क्या है?
2. यदि $MPC = 0.8$ तो गुणक क्या है?
3. यदि निवेश में वृद्धि 50 करोड़ रुपये होती है और आय 1000 करोड़ रुपये से बढ़कर 1200 करोड़ रुपये हो जाती है तो गुणक ज्ञात कीजिए।
4. यदि MPC अधिक है तो गुणक कम होता है। (सही या गलत)
5. यदि MPS अधिक है तो गुणक कम होता है। (सही या गलत)

6. MPC = 0.8 दिया है निवेश में 100 करोड़ रुपये की वृद्धि होती है। दूसरे चक्र में उपभोग में वृद्धि ज्ञात करो। दो चक्रों के पश्चात् आय में कुल वृद्धि क्या होगी?

27.4 आधिक्य मांग

आपने सीखा कि आय का संतुलन स्तर उस बिंदु पर आधारित होता है, जहां समग्र मांग (AD) उत्पादन के स्तर (Y) के बराबर होती है। हम यह मानते हैं कि उत्पादन का स्तर अधिकतम संभव है या पूर्ण स्तर पर है, जिसे अर्थव्यवस्था के संसाधनों के पूर्ण प्रयोग द्वारा प्राप्त किया जाता है। इसका अर्थ यह है कि अर्थव्यवस्था का उत्पादन पूर्ण स्तर से आगे नहीं बढ़ेगा। आपने सीखा है कि निवेश के माध्यम से उत्पादन या आय में वृद्धि निवेश गुणक की क्रियाशीलता के कारण होती है। अब, अर्थव्यवस्था की ऐसी स्थिति के विषय में विचार करो, जो पहले से ही उत्पादन के पूर्ण स्तर पर कार्य कर रही है और उस स्तर पर निवेश में वृद्धि होती है। क्या होगा? क्या उत्पादन का स्तर और बढ़ेगा? उतर है कि अर्थव्यवस्था का उत्पादन नहीं बढ़ेगा। लेकिन निवेश में वृद्धि के कारण जो कि एक प्रकार का स्थिर अथवा स्वायत्त व्यय है, समग्र मांग बढ़ जाएगी और उत्पादन के पूर्ण स्तर से अधिक हो जाएगी। ऐसी स्थिति अर्थव्यवस्था में आधिक्य मांग कहलाती है।

इसलिए आधिक्य मांग उस स्थिति को कहते हैं, जब समग्र मांग अर्थव्यवस्था के संभावी उत्पादन के स्तर से अधिक हो जाती है।

आधिक्य मांग का परिणाम अर्थव्यवस्था में स्फीति है। कारण स्पष्ट है कि जब लोगों के पास अधिक वस्तुओं और सेवाओं की मांग करने के लिए अधिक मुद्रा होती है, जबकि उत्पादन की पूर्ति इससे कम होती है तो मांग और पूर्ति की शक्तियों में संतुलन लाने के लिए कीमत स्तर में वृद्धि होती है।

रेखाचित्र द्वारा आधिक्य मांग तब उत्पन्न होती है, जबकि AD रेखा संतुलन स्तर पर ऊपर की ओर खिसक जाती है।

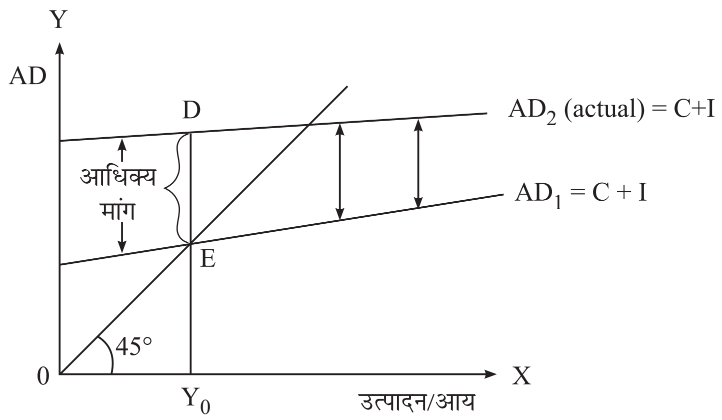

चित्र 27.5

रेखाचित्र में, यह दिखाया गया है कि संतुलन स्थिति बिंदु E पर है, जहां समग्र मांग रेखा AD_1, 45° रेखा को मिलती है। अर्थव्यवस्था को आय के संतुलन स्तर पर मान लो। अब समग्र मांग को AD_1 से AD_2 तक स्थिर निवेश अथवा उपभोग में वृद्धि के कारण बढ़ने दो, जिसके कारण एक अंतराल DE के बराबर पैदा हो जाता है, जो कि नई और पुरानी समग्र मांग के बीच अंतर है। समग्र मांग में वृद्धि होने के कारण यहां आय Yo से आगे नहीं बढ़ रही है। इसलिए DE अर्थव्यवस्था में आधिक्य मांग का माप है। यह अंतराल स्फीति अंतराल भी कहलाता है।

27.5 मांग में कमी

मांग में कमी आधिक्य मांग की स्थिति से ठीक विपरीत है। जब अर्थव्यवस्था अपने पूर्ण रोजगार के स्तर पर होती है और स्वायत्त उपभोग या निवेश में गिरावट के कारण समग्र मांग कम हो जाती है तो इसे मांग में कमी कहते हैं। ऐसी स्थिति में उत्पादन का स्तर बाजार में अतिरेक की स्थिति में होता है और लोग इसकी मांग नहीं करते। इसका मांग और पूर्ति की शक्तियों को संतुलन में लाने के लिए, कीमत स्तर के गिरने के लिए दबाव पड़ता है। इससे अर्थव्यवस्था में अवस्फीतिक दबाव पड़ता है, जहां अवस्फीति वस्तुओं तथा सेवाओं की कीमतों में गिरावट का संकेत देती है।

रेखाचित्र के रूप में, मांग में कमी को पूर्ण रोजगार के स्तर पर समग्र मांग रेखा में कमी से दिखाया है, जैसा कि नीचे रेखाचित्र से स्पष्ट है।

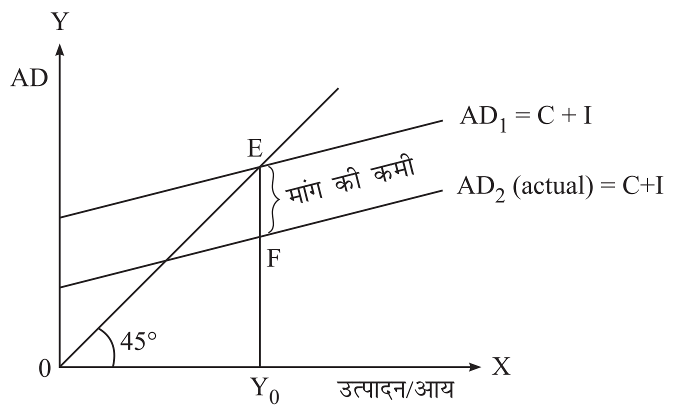

चित्र 27.6

रेखाचित्र में आय का संतुलन बिंदु E पर निर्धारित होता है, जहां आरंभिक समग्र मांग वक्र AD_1, 45° रेखा को काटता है। Yo आय का स्तर पूर्ण रोजगार स्तर है। अब इस स्तर पर AD_1 गिरकर AD_2 हो जाती है, जिससे उत्पादन में कमी के बिना EF के बराबर अंतराल उत्पन्न हो जाता है। EF मांग में कमी का माप है। इस अंतराल को अवस्फीति अंतराल भी कहा जाता है।

मांग के आधिक्य तथा मांग में कमी को दूर करने के उपाय

समाज के लिए स्फीति तथा अवस्फीति दोनों ही बुरे होते हैं। स्फीति लोगों की क्रय शक्ति को कम कर देती है, इसलिए वह उस मात्रा को नहीं खरीद पाते, जो वह खरीदना चाहते हैं, जिससे उनके संतुष्टि के स्तर में गिरावट आ जाती है। निर्धन और मध्यम वर्ग पर कीमत स्तर में वृद्धि का अधिक बुरा प्रभाव पड़ता है। इसी प्रकार, उत्पादकों पर अवस्फीति की स्थिति में कीमतों के घटने का बुरा प्रभाव पड़ता है। उनका लाभ का स्तर, कीमतों में गिरावट आने से, कम हो जाता है, जो उन्हें निवेश कम करने के लिए दबाव डालता है। इससे आगे रोजगार के स्तर में कमी आ जाती है। इसलिए समस्त समाज पर अवस्फीति का बुरा प्रभाव पड़ता है।

इसलिए स्फीति तथा अवस्फीति दोनों पर ही नियंत्रण करना अनिवार्य है। सरकार द्वारा इन समस्याओं को हल करने के लिए अपनाए गए उपायों तथा नीतियों में निम्न शामिल हैं–

1. राजकोषीय नीति

2. मौद्रिक नीति

1. राजकोषीय नीति

राजकोषीय नीति, सरकार की एक आर्थिक नीति है, जिसका संबंध (a) कर (b) सार्वजनिक व्यय और (c) सार्वजनिक ऋण से है। सरकार राजकोषीय नीति का प्रयोग बढ़ती कीमतों को रोकने और अवस्फीति की स्थिति से निपटने के लिए करती है। स्फीति अथवा आधिक्य मांग की स्थिति में सरकार निर्धनों को कर देने से मुक्त कर सकती है और कर से मुक्त रहने वाली आय के स्तर की सीमा को बढ़ाकर मध्यम वर्ग पर कर का बोझ घटा सकती है।

इसके साथ-साथ सरकार धनी लोगों पर कर का बोझ बढ़ा सकती है, जो ऊंची दर से कर देने में समर्थ हैं। वस्तुओं पर कर के विषय में सरकार विलासिता की वस्तुओं पर ऊंची दर से कर लगा सकती है तथा अधिकतम जनसंख्या द्वारा प्रयोग की जाने वाली सामान्य और अनिवार्य वस्तुओं पर कर घटा सकती है।

कर नीति के साथ-साथ सरकार को सार्वजनिक व्यय तथा सार्वजनिक ऋण में कमी कर देनी चाहिए, जिससे आधिक्य मांग को नियंत्रित किया जा सके। सार्वजनिक व्यय में कमी तथा सार्वजनिक ऋण में कमी से मुद्रा की पूर्ति कम हो जाता है, जिससे स्फीति कम हो जाती है।

मांग में कमी की दशा में सरकार को अपना व्यय को बढ़ाना चाहिए और अधिक ऋण लेने चाहिए, जिससे कि अर्थव्यवस्था ऊपर उठ सके। सार्वजनिक व्यय में, लोगों की भलाई, आधारिक संरचना, रोजगार के सृजन के अवसरों में वृद्धि के लिए निवेश आदि पर व्यय सम्मिलित हैं। इसके लिए सरकार इन योजनाओं के वित्त की व्यवस्था के लिए ऋण ले सकती है।

मौद्रिक नीति

मौद्रिक नीति को देश के केंद्रीय बैंक द्वारा लागू किया जाता है। भारत में, भारतीय रिजर्व बैंक मौद्रिक नीति को लागू करता है।

मौद्रिक नीति से अभिप्राय साख नियंत्रण के उपायों से है, जो एक केंद्रीय बैंक, व्यावसायिक बैंकों द्वारा साख सृजन को नियमित और नियंत्रित करने के लिए प्रयोग करता है। व्यवसायिक बैंकों द्वारा बहुत अधिक साख सृजन करने से देश में आधिक्य मांग तथा साख सृजन की सुविधाओं में कमी से देश मुद्रा की पूर्ति में कमी, मांग में कमी अथवा अवस्फीति उत्पन्न हो जाती है। मौद्रिक नीति का उद्देश्य मांग आधिक्य और मांग में कमी को नियंत्रित करना होता है।

मौद्रिक नीति के निम्न उपकरण हैं–

(i) बैंक दर

(ii) खुले बाजार की क्रियाएं

(iii) परिवर्तनशील जमा अनुपात

बैंक दर वह दर है, जिस पर केंद्रीय बैंक व्यावसायिक बैंकों की प्रतिभूतियों को भुनाती है। यह वह दर भी है, जिस पर व्यावसायिक बैंक केंद्रीय बैंकों से ऋण लेते हैं। आधिक्य मांग को ठीक करने के लिए केंद्रीय बैंक, बैंक दर बढ़ा देता है, जिससे व्यावसायिक बैंकों की ऋण लेने की क्षमता नियंत्रित हो जाती है, जिससे वे ग्राहकों को ऋण बांटने के कार्य में भाग न ले। जिसके कारण साख की आपूर्ति पर नियंत्रण हो जाता है। दूसरी ओर केंद्रीय बैंक अवस्फीति को ठीक करने के लिए बैंक दर घटा सकता है।

खुले बाजार की क्रियाओं से अभिप्राय केंद्रीय बैंक द्वारा प्रतिभूतियों के क्रय तथा विक्रय से है। आमतौर पर व्यावसायिक बैंक इन प्रतिभूतियों के क्रेता होते हैं।

मुद्रा स्फीति के समय (आधिक्य मांग स्थिति) केंद्रीय बैंक सरकारी प्रतिभूतियों को व्यावसायिक बैंकों को मुद्रा के बदले बेच देता है, जिससे अर्थव्यवस्था में मुद्रा की पूर्ति घट जाती है तथा कीमतें घटने लगती हैं। अवस्फीति के समय केंद्रीय बैंक व्यावसायिक बैंकों को मुद्रा का भुगतान करके इन प्रतिभूतियों को वापस क्रय कर लेता है, जिससे मुद्रा की पूर्ति बढ़ जाती है तथा अवस्फीति की स्थिति ठीक हो जाती है।

व्यावसायिक बैंकों की परिसंपत्तियों का एक निश्चित प्रतिशत केंद्रीय बैंक के पास कोष के रूप में जमा रहता है, जिसे परिवर्तनशील कोष अनुपात कहते हैं। आधिक्य मांग को नियंत्रित करने के लिए केंद्रीय बैंक परिवर्तनशील कोष अनुपात को बढ़ा देता है, जिससे व्यावसायिक बैंकों को केंद्रीय बैंक के पास अपनी परिसंपत्तियों की अधिक राशि जमा करनी पड़ती है। इससे समाज में अधिक मुद्रा पूर्ति की उनकी क्षमता कम हो जाती है। अवस्फीति की स्थिति से निपटने के लिए केंद्रीय बैंक परिवर्तनशील जमा अनुपात को कम कर देता है, जिसका दूसरे विपरीत प्रभाव पड़ता है (पाठ 28 में मौद्रिक नीति को भी देखिए)।

अर्थव्यवस्था में आधिक्य मांग का मुख्य कारण बैंकों द्वारा साख की पूर्ति में वृद्धि है, जिससे भविष्य में अधिक उत्पादन की संभावनाओं में वृद्धि हो सके। साख सृजन में वृद्धि अथवा मुद्रा की पूर्ति में वृद्धि से वस्तुओं और सेवाओं की मांग में तुरंत वृद्धि हो जाती है। इसी प्रकार, साख में कमी अथवा मुद्रा पूर्ति में कमी से मांग में कमी उत्पन्न हो जाती है, क्योंकि लोगों

के पास वस्तुओं और सेवाओं के क्रय के लिए पर्याप्त मुद्रा नहीं होती, जिससे कीमतों में गिरावट आ जाती है।

पाठगत प्रश्न 27.4

1. आधिक्य मांग से स्फीतिक दबाव पड़ता है। (सही या गलत)
2. मांग में कमी कीमत में वृद्धि लाती है। (सही या गलत)
3. मुद्रा आपूर्ति में वृद्धि आधिक्य मांग पैदा करती है। (सही या गलत)
4. साख की आपूर्ति में कमी अवस्फीति लाती है। (सही या गलत)
5. कर नीति, मौद्रिक नीति का एक भाग है। (सही या गलत)
6. अवस्फीति को ठीक करने के लिए सार्वजनिक व्यय में वृद्धि करनी चाहिए। (सही या गलत)
7. सार्वजनिक ऋण, आधिक्य मांग को ठीक करने के लिए कम करना चाहिए। (सही या गलत)
8. मुद्रा की आपूर्ति में वृद्धि करने के लिए, बैंक दर घटा देनी चाहिए। (सही या गलत)
9. खुले बाजार की क्रियाएं राजकोषीय नीति का एक उपकरण है। (सही या गलत)

आपने क्या सीखा

- समग्र मांग के घटक, परिवारों की उपभोग मांग, फर्मों द्वारा निवेश, सरकारी व्यय तथा शुद्ध निर्यात हैं।
- आय का संतुलन स्तर उस बिंदु पर निर्धारित होता है, जहां समग्र मांग अर्थव्यवस्था में कुल उत्पादन के बराबर होती है। सूत्र के रूप में, दो क्षेत्रीय अर्थव्यवस्था में $C + I = C + S$
- वह बिंदु जिस पर $C + I = C + S$ प्रभावी मांग का बिंदु भी कहलाता है।
- निवेश गुणक को निवेश में वृद्धि करने पर आय में अनुपातिक वृद्धि के रूप में परिभाषित किया जाता है।
- निवेश गुणक $\dfrac{1}{1-MPC} = \dfrac{1}{MPS}$
- आय में वृद्धि = निवेश गुणक × निवेश में वृद्धि

  अथवा $\Delta y = \dfrac{1}{1-MPC}\Delta I$

- गुणक की प्रक्रिया में कई चक्रों में आय में वृद्धि, जिसमें निवेश में आरंभिक वृद्धि तथा उपभोग में तदन्तर वृद्धि सम्मिलित होती है।
- आधिक्य मांग से अभिप्राय उत्पादन के पूर्ण रोजगार स्तर पर समग्र मांग में वृद्धि से है।
- आधिक्य मांग अर्थव्यवस्था में स्फीतिक दबाव लाती है।
- मांग के कमी से अभिप्राय उत्पादन के पूर्ण रोजगार के स्तर पर समग्र मांग में कमी से है।
- मुद्रा आपूर्ति में वृद्धि, अर्थव्यवस्था में आधिक्य मांग पैदा करती है। आधिक्य मांग स्फीति अंतराल भी कहलाती है।
- मुद्रा आपूर्ति में कमी, अर्थव्यवस्था में मांग में कमी पैदा करती है। मांग में कमी अवस्फीति अंतराल भी कहलाती है।
- आधिक्य मांग और मांग में कमी को राजकोषीय नीति तथा मौद्रिक नीति के प्रयोग द्वारा ठीक किया जा सकता है।
- राजकोषीय नीति, सरकार की कराधान, सार्वजनिक व्यय तथा सार्वजनिक ऋण से संबंधित नीति है।
- आधिक्य मांग (मांग में कमी) को सार्वजनिक व्यय तथा सार्वजनिक ऋण को घटाकर (बढ़ाकर) ठीक किया जा सकता है।
- मौद्रिक नीति, केंद्रीय बैंक की, व्यावसायिक बैंकों द्वारा साख के सृजन को नियंत्रित करने की नीति है। मौद्रिक नीति के उपकरण, बैंक दर, खुले बाजार की क्रियाएं तथा परिवर्तनशील कोष अनुपात हैं।
- आधिक्य मांग (मांग में कमी) को बैंक दर बढ़ाकर (घटाकर) खुले बाजार में प्रतिभूतियों को बेचकर (खरीदकर) और परिवर्तनशील जमा अनुपात को बढ़ाकर (घटाकर) ठीक किया जा सकता है।

पाठांत प्रश्न

1. समग्र मांग के विभिन्न घटकों का संक्षिप्त विवरण दो।
2. एक-दो क्षेत्रीय अर्थव्यवस्था में संतुलन आय के निर्धारण की व्याख्या करो।
3. गुणक की परिभाषा दो और इसका मूल्य ज्ञात करो।
4. गुणक की क्रियाशीलता की विभिन्न चक्रों द्वारा व्याख्या करो।
5. आधिक्य मांग की परिभाषा दीजिए। उचित रेखाचित्र द्वारा इसकी व्याख्या करो।

6. मांग में कमी की परिभाषा दीजिए? उपयुक्त रेखाचित्र का प्रयोग करके इसकी व्याख्या कीजिए।
7. प्रभावी मांग से आपका क्या अभिप्राय है? इसे प्रदर्शित करने के लिए उपयुक्त रेखाचित्र का प्रयोग कीजिए।
8. राजकोषीय नीति के कौन घटक हैं?
9. उनका प्रयोग, आधिक्य मांग को कम करने के लिए, कैसे किया जाता है?
10. मौद्रिक नीति के कौन उपकरण हैं? अर्थव्यवस्था में आधिक्य मांग को ठीक करने के लिए इनका प्रयोग कैसे किया जाता है?
11. मांग में कमी को रोकने के लिए राजकोषीय और मौद्रिक नीतियों का प्रयोग कैसे किया जाता है?

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

27.1

1. सही 2. शुद्ध निर्यात 3. परिवार 4. (b)

27.2

1. निवेश 2. सीमांत उपभोग की प्रवृत्ति

3. $AD = C + I$, ED वह बिंदु है, जहां $C + I = C + S$

27.3

1. 2 2. 5 3. 4 4. गलत 5. सही

6. 80 करोड़ रुपये, 180 करोड़ रुपये

27.4

1. सही 2. गलत 3. सही 4. सही